विकास की अवधारणा

पाठ सं	पाठ का नाम	कौशल	गतिविधि
18	विकास की अवधारणा	स्व-जागरुकता तथा सहानुभूति कुशल संप्रेषण, समस्या समाधान तथा निर्णय लेना तनाव से निपटना तथा भावात्मकता से निपटना	विकास तथा मानव विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना

सारांश

अभिवृद्धि (Growth) से तात्पर्य वजन तथा लंबाई में वृद्धि तथा शारीरिक अनुपातों में परिवर्तन से है। इसका संदर्भ मात्रात्मक परिवर्तन से है, उदाहरण के लिए यह मापना संभव है कि एक विशिष्ट समयावधि में बच्चा कितना लंबा हुआ है। **विकास**' से तात्पर्य न केवल शारीरिक परिवर्तनों से है बल्कि गुणात्मक परिवर्तनों से भी है जैसे व्यक्तित्व में परिवर्तन या अन्य मानसिक या भावनात्मक पहलुओं में परिवर्तन। **आनुवंशिकता** वह गुण है जिससे व्यक्ति का जन्म होता है। ये गुण व्यक्ति को अपने माता-पिता से प्राप्त होते हैं। बच्चे के गुण/क्षमताएं आनुवंशिकता द्वारा निर्धारित होती हैं। किन्तु व्यक्ति किस स्तर तक इन क्षमताओं को विकसित करता है यह उसे **वातावरण** से प्राप्त अवसरों पर निर्भर करता है।

विकास कुछ निर्धारित **सिद्धांतों** द्वारा नियंत्रित होता है जो सभी व्यक्तियों पर लागू होते हैं।

आनुवांशिकता तथा वातावरण दोनों ही शक्तिशाली कारक हैं जो व्यक्ति को प्रभावित करते हैं। विकास को प्रभावित करने वाले कुछ वातावरणीय कारक हैं - पोषण, आरंभिक उद्दीपन, बच्चों के पालन-पोषण की विधि।

विकास के प्रकार

शारीरिक विकास : यह केवल वजन तथा लंबाई का बढना नहीं है बल्कि इसमें सकल मोटर कौशलों का विकास भी शामिल है जैसे चलना, उछलना, दौड़ना, पकड़ना तथा **सूक्ष्म मोटर कौशल** जैसे पेंटिंग, ड्राइंग करना, बटन लगाना, चम्मच का प्रयोग तथा लिखना शामिल है।

ज्ञानात्मक विकासः इसका अर्थ है कि बच्चा किस प्रकार सीखता है और अपनी ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग करके सूचनाओं को किस प्रकार स्थापित करता है(देखना, सुनना, स्पश, सूंघना तथा स्वाद), सूचनाओं को अपने मस्तिष्क में स्थापित करके तथा इन्हें कुशलतापूर्वक अपनी स्मरण शक्ति द्वारा पुनःप्राप्त करके अपने वातावरण को समझता है।

सामाजिक तथा भावात्मक विकास : इसका अर्थ सामाजिक कौशलों का विकास है, जैसे अपने अभिजात वर्ग तथा अन्यों के साथ संव्यवहार करके बांटने, सहयोग, धैर्य आदि जैसे सामाजिक कौशलों को विकसित करना।

भाषात्मक विकास : इसका अर्थ है कि हम संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों द्वारा एक-दूसरे के साथ संव्यवहार करते हैं जैसे लिखना, बोलना, संकेत भाषा, चेहरे के भाव, मुद्राएं तथा अनेक कलात्मक रुप।

प्रमुख बिन्दु

विकास को प्रभावित करने वाले कारक

- **पोषणः** हम जो हैं वह भोजन का परिणाम हैं' बहुत अधिक या बहुत कम खाना - स्वस्थ या अस्वस्थ भोजन करना, ये सब हमारी शारीरिक वृद्धि तथा विकास को प्रभावित करते हैं।
- **आरंभिक उद्दीपनः** उद्दीपन वातावरण बच्चे के आनुवांशिक गुणों को विकसित करने में सहायक होता है।
- **बच्चों के पालन-पोषण की विधियांः** जिन बच्चों का पालन-पोषण माता-पिता द्वारा उदारवादी या सुदृढ तरीके से किया जाता है, वे व्यक्तिगत तथा सामाजिक रुप से बेहतर ढ़ंग से समायोजन कर पाते हैं।

अपने ज्ञान का निर्माण करें

आनुवंशिकता तथा वातावरण दोनों ही ऐसे प्रभावपूर्ण कारक हैं जो व्यक्ति को प्रभावित करते हैं।

- हालांकि हम व्यक्ति की आनुवांशिक संरचना(आनुवंशिकता) के संबंध में ज्यादा कुछ नहीं कर सकते हैं किन्तु व्यक्ति के विकास के प्रति इसे सकारात्मक बनाने के लिए वातावरण को नियंत्रित किया जा सकता है।
- विकास को प्रभावित करने वाले कुछ वातावरणीय कारक हैं - पोषण, आरंभिक उद्दीपन तथा बच्चे के पालन-पोषण की विधियां।

क्या जानना महत्वपूर्ण है?

सकल मोटर विकास

सकल मोटर विकास से तात्पर्य बड़ी पेशियों पर नियंत्रण से है। ये पेशियां घुटनों के बल चलने, खड़े होने, चलने, ऊपर चढ़ने तथा दौड़ने जैसी क्रियाओं में सहायक होती हैं। नीचे कुछ कौशलों का उल्लेख किया गया है जिसे बच्चे विभिन्न आयुओं पर प्राप्त करते हैं।

शिशु

3 महीने-गर्दन संभालना
6 महीने-सहारे के साथ बैठना
8 महीने-सहारे के बिना बैठना
9 महीने-सहारे के साथ खड़े होना
11 महीने-घुटनों के बल चलना
12 महीने-बिना सहारे के खड़ा होना
12 महीने-सहारा लेकर चलना
13 महीने-बिना सहारा चलना
18 महीने-दौड़ना
24 महीने-सीढ़ियां चढना
36 महीने-तिपहिया साइकिल चलाना

आरंभिक बालावस्था

2 वर्ष-सीढ़ियां चढना और तिपहिया साइकल चलाना
5 वर्ष-दौड़ना
5-6 वर्ष-ऊंचाई से कूदना
6 वर्ष-गैंद फेंकना व पकड़ना

सूक्ष्म मोटर विकास

सूक्ष्म मोटर विकास के अंतर्गत छोटी पेशियों का प्रयोग शामिल है। इन पेशियों की सहायता से किए जाने वाले कार्यों में शामिल हैं -वस्तुएं पकड़ना, बटन व चेन लगाना, ड्रॉइंग करना व लिखना। नीचे कुछ कौशलों का उल्लेख किया गया है जैसे बच्चे विभिन्न आयुओं पर प्राप्त करते हैंः

शिशु

4 महीने - अपने हाथ में झुनझुना/रिंग को पकड़ लेता है।
5 महीने - वस्तु तक पहुंचना व उसे दोनों हाथों से पकड़ना।
7 महीने - मजबूत पकड़ के साथ वस्तुओं को पकड़ना ।
9 महीने - उगंली व अगूंठे की मदद से वस्तु पकड़ना।

आरंभिक बालावस्था

$2\frac{1}{2}$ - 5 वर्ष ज्यामितीय चित्रों की नकल करना ।
5 वर्ष - स्वयं भोजन करना, कपड़े पहनना तथा तैयार होना व बड़े अक्षरों में अपना नाम लिखना।

क्या आप जानते हैं?

- विकास कुछ निश्चित सिद्धांतों पर आधारित होता है जो सभी लोगों पर लागू होते हैं।
- बच्चे को अपने अस्थायी दातों/ दूध के दांतों का पूरा सेट 3 वर्ष की आयु में प्राप्त होता है।
- 5-6 वर्ष की आयु में अस्थायी दांतों के स्थान पर स्थायी दांत आने लगते हैं।
- शारीरिक संरचनाएं तीन प्रकार की होती हैंः
  - o **स्थूलकारी (एंडोमोर्फिक)** अर्थात बच्चे जिनका शरीर निर्माण थुलथुला, मोटा होती है।
  - o **मेसोमोर्फिक** अर्थात बच्चे जिनका शरीर निर्माण स्थूल पेशीय होता है। सामान्यतः इस प्रकार के बच्चे भारी, कठोर तथा आयताकार होते हैं।
  - o **एक्टोमार्फिक** अर्थात बच्चे जिनका शरीर निर्माण लम्बा तथा सिलेंडरनुमा होता है।

अपने ज्ञान का विस्तार करें

जीवन के आरंभिक वर्ष मनुष्य के स्वस्थ विकास के लिए नींव डालने का विशिष्ट अवसर प्रदान करते हैं। अनुसंधान बताते हैं कि शिशु के जीवन के प्रारंभिक पांच वर्ष उसके सम्पूर्ण जीवन के विकास को प्रभावित करते हैं। आरंभिक नकारात्मक अनुभव बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा सकते हैं और उसके ज्ञानात्मक, व्यावहारात्मक, सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

स्व-मूल्यांकन करें

1. बच्चे जो बाल्यावस्था में अपनी आयु के अनुसार अधिव लंबे होते हैं वे वयस्कावस्था में भी लंबे रहते हैं। इस अवलोकन से विकास का कौन-सा सिद्धांत सिद्ध होता है?
2. अच्छा भावात्मक विकास सौहार्द्रपूर्ण संबंधों को स्थापित करने में सहायक होता है । 60 शब्दों में इस विवरण का औचित्य सिद्ध कीजिए।

अपने अंकों को अधिकतम बनाएं

विषय का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए पाठ में दी गई गतिविधियों को करें।
अभिवृद्धि तथा विकास के विभिन्न स्तरों को दर्शाने वाली तालिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।
विकास के सिद्धांतों का अध्ययन करें।